नवम् प्रतियोगिता
मंथन के मोती

राष्ट्रीय सुलेखा समिति की **नवम् प्रतियोगिता आत्मकथा लेखन - "पीहर के आँगन से ससुराल के महलों तक का सफर"** ने सफलता के नवीन पायदान पर कदम रखा | ये सफलता राष्ट्रीय नेतृत्व, सुलेखा सदस्यों और सभी प्रदेश पदाधिकारियों की संगठन के प्रति समर्पित सद्भावना का परिणाम है | सभी प्रदेशों से 81 रचनाएं आयीं | वे महिलाएं जो घर गृहस्थी में रमी हुई हैं और घर की चार दीवारी को ही अपनी सीमा रेखा एवं दुनिया मानकर उसी में ख़ुशी का अनुभव करती हैं, उनके द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्त करना और बेबाक होकर सबके सम्मुख रखना सचमुच ख़ुशी की बात है | सुलेखा के इन प्रयासों से समाज में नवीन जागृति आ रही है | सभी रचनाओं को पढ़ने के बाद कई बातें ऐसी हैं जो मैं आपके साथ बांटना चाहूंगी |

सभी लेखिकाओं ने बचपन को भरपूर जिया है | पुरानी यादों में खो जाना, भावों का प्रवाह सभी कुछ बहुत सुन्दर है | पीहर के आँगन का वर्णन - बचपन के मस्ती भरे दिन - सहेलियों संग खेलना - माँ के हाथ से खाना खाना - पिता से ज़िद करना - भाई बहन की लड़ाई, मनुहार, प्यार, फिर मेल मिलाप - सब कुछ बहुत ही सुन्दर यादें हैं जिन्हे लेखिकाओं ने बहुत ही ख़ूबसूरती से अपनी कलम से उकेरा है | कुछ ने लिखा है जब मन आया तब खाया जब मन आया तब सो गए, केवल पढ़ाई और मस्ती, कोई ज़िम्मेदारी नहीं, बहुत सुन्दर अतीत का वर्णन | वहीं दूसरी ओर एक युवती कब महिला बनने की ओर अग्रसर हो गयी, ससुराल में कदम रखते ही धीरे धीरे ज़िम्मेदारियों को समझने लगी इन बातों को भावपूर्ण तरीके से लिखा गया है |कुछ ने लिखा कि ससुराल के महलों की रानी बनते ही सारी खिलंदड़ापन एकाएक गायब हो गया पता ही नहीं चला, कब वह बड़ी होकर एक ज़िम्मेदार बहू बन गयी | सभी कर्तव्यों को सुबह से रात पालन करने वाली, बड़ों की आज्ञा सर झुकाकर मानने वाली, बिना कुछ कहे सभी कार्य समय पर करने वाली, अपने सहचर की प्रेयसी और संगिनी, कई रूपों में ढल कर एक नव युवती सुघढ़ गृहणी बन गयी | अधिकाँश लेखिकाओं ने सास ननद और अन्य ससुराल वालों को अपने इस परिवर्तित रूप में सहयोगी मानकर धन्यवाद भी कहा है |

यद्यपि अधिकाँश रचनाएं अच्छी लिखी गयीं, परन्तु चयन प्रक्रिया के अपने नियम होते हैं जिन्हे मानना अनिवार्य होता है |प्रतियोगिता की नवें पायदान पर भी कई प्रतियोगी नियमों का ध्यान नहीं रख रहे हैं | बार बार याद दिलाने पर भी शब्द सीमा का ध्यान नहीं रखा जा रहा है | इस प्रतियोगिता में 700 शब्द मांगे गए थे पर कही 500 शब्द थे तो कही 1100-1200 शब्द तक भी लिखे गए | इसी कारण कई अच्छी रचनाएं वरीयता में स्थान न प्राप्त कर सकी | कई रचनाएँ बहुत ही साधारण भाषा में लिखी गयीं | हमें पता होना चाहिए कि बोल चाल की भाषा और लेखन की भाषा का स्वरुप किंचित अलग होता है | जो अशुद्धियाँ

बोल चाल की भाषा में सहज स्वीकार कर ली जाती हैं वही लिखते समय विशेष रूप से दृष्टिगोचर हो जाती हैं | अतः व्याकरण पर ध्यान दिया जाना अत्यावश्यक है | शब्दों का चयन, भाव प्रवाह, सुन्दर भाषा और व्याकरण की अशुद्धि के कारण रचनाएं निर्णायकों को प्रभावित करने में असफल हो जाती हैं और परिणाम स्वरुप वरीयता के क्रम में पिछड़ जाती हैं | सुलेखा समिति का सभी लेखिकाओं से बार बार आग्रह है कि उत्कृष्ट भाषा और सुन्दर भाव प्रवाह को हृदयंगम करते हुए नियामवली के अनुसार अपनी रचनाएं हमें प्रेषित करें, जिससे सभी को उनकी मेहनत का पूर्ण प्रतिदान मिल सके |

आत्मकथा लेखन सुनने में तो साधारण सी बात लगती है पर ये इतना सहज भी नहीं होता है क्योंकि अपने विगत को जीते हुए सबके सम्मुख रखना इतना आसान भी नही होता पर हमारी लेखिकाओं ने यह कर दिखाया | इसके लिए सभी लेखिका वर्ग भूरि भूरि प्रशंसा की पात्र हैं |

सुलेखा समिति राष्ट्रीय नेतृत्व की आभारी है | निर्णायक मंडल और सभी प्रदेश पदाधिकारियों का भी धन्यवाद जिनके सहयोग से प्रतियोगिता समय से पूर्ण हो पाती हैं | प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रतियोगिता की सफलता में सहभागी बनीं सभी बहनों का भी समिति सदस्य हृदय से धन्यवाद करते हैं और आगे भी इसी सहयोग की अपेक्षा करते हैं |

धन्यवाद

सविता काबरा
राष्ट्रीय सुलेखा समिति संयोजिका
मुंबई